छोटा उदेपुर-गुज.। प्रिन्सीपल डिस्ट्रिक्ट जज के.एस. पटेल एवं उनकी धर्मपत्नी कान्ता बहन को ज्ञानचर्चा के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मोनिका। साथ हैं सी.ए. नितिन सावेडकर तथा ब्र.कु. शिवानी।

उस्मानाबाद-महा.। सेवाकेन्द्र में आने पर मराठी फिल्मों की प्रसिद्ध अभिनेत्री रेखा को परमात्म परिचय देते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति।

गुण्डरदेही-छ.ग.। 'सात दिवसीय ज्ञान यज्ञ शिविर स्थल' के भूमि पूजन कार्यक्रम में उपस्थित हैं नगर पंचायत अध्यक्ष कोमल सोनकर, पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष के.के. राजू चन्द्राकर, बहन भारती सोनकर, मार्केटिंग सोसायटी अध्यक्ष प्रमोद जैन, एम.एम.ऑटो के संचालक मनीष जैन, ब्र.कु. भारती तथा अन्य भाई बहनें।

मुंद्रा-कच्छ(गुज.)। भगवान महावीर पशु रक्षा केन्द्र 'एंकर वाला अहिंसा धाम' के 26वें स्थापना दिवस पर आयोजित विशेष कार्यक्रम में ब्र.कु. सुशीला को सम्मानित करते हुए एंकर कंपनी के डायरेक्टर दामजी भाई एंकर वाला।

नवसारी-गुज.। बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गीता। साथ हैं ब्रान्च के चीफ मैनेजर पंकज देसाई, बैंक ऑफ इंडिया यूनियन के लीडर रेमन्ड जिल्ला, ऑफिसर सुरेश पटेल तथा कैशियर यशवंत पटेल।

वरघाट-म.प्र.। 'गीता ज्ञान' के शुभारंभ अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए नगर पालिका अध्यक्ष रंजीत वासनिक, पूर्व तहसीलदार चैनसिंह राहांगडाले, गायत्री परिवार अध्यक्ष हेमराज बघेल, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. गीता तथा अन्य।

वृक्ष समान ही 'मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष'

- गतांक से आगे...

जब समय सतोप्रधान था तब सतयुग और त्रेतायुग में मनुष्य आत्मा के अंदर दैवी संस्कारों का उदय था। इसलिए वहाँ सात्विक प्रकृति थी। बाद में फिर इंद्रियों के विषय में आ गए तो कर्म को बांधने वाले रजोगुण और तमोगुण के अनुसार प्रकृति निर्मित हुई।

परमात्मा कहते हैं, मैं उस आदि पुरुष की शरण में हूँ जहाँ से पुरातन प्रकृति स्फूटित हुई है। वह उसे वैराग्य रूपी शस्त्र द्वारा काट कर परमपद को प्राप्त कर लेता है। जैसे कि कोई भी वृक्ष को देखो, जब जड़जड़ीभूत हो जाता है, तो उसको आग लग जाती है या वो गिर जाता है। जब गिर जाता है तो उसी वृक्ष में एक बीज धरती के अंदर समा जाता है जहाँ से फिर नया वृक्ष प्रस्फुटित होता है। धरती ही उसको सहारा देती है। जंगलों में वृक्ष कैसे निकलते हैं? सालों साल जब हो जाते हैं, जड़जड़ीभूत अवस्था जब हो जाती है तो उसी में से ही एक बीज नीचे गिरकर के फिर से एक नये वृक्ष की शुरुआत करता है।

ठीक इसी प्रकार जब मनुष्य सृष्टि रूपी वृक्ष भी जड़जड़ीभूत कलियुग में हो जाता है अर्थात् ये संसार जब पुराना हो जाता है तब भगवान ने कहा कि वही आकर आदि पुरुष की शरण लेता है। संसार का आदि पुरुष कौन है? वो तो वही जानता है। उसकी शरण लेकर के वैराग्य के द्वारा, इसे काटकर फिर एक नये वृक्ष को प्रारंभ करते हैं। इन गुणों से सम्पन्न साधक उस परम पद को प्राप्त कर सकता है।

अर्जुन फिर प्रश्न पूछता है कि किन गुणों से सम्पन्न साधक उस परम पद को प्राप्त होते हैं?

भगवान ने उसकी विशेषताएं बताईं कि जिनका मान और मोह निवृत्त हो गया है, न उसको मान-शान चाहिए और न उसको किसी वस्तु या व्यक्ति का मोह

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

है। जिन्होंने संगदोष को जीत लिया है, जो आत्म-स्थिति में स्थित हैं। जिनकी कामनाएं निवृत्त हो चुकी हैं और जो सुख-दु:ख नामक द्वंद्वों से मुक्त हो गये हैं। ऐसे ज्ञानी जन उस अविनाशी पद को प्राप्त होते हैं। यह उनके लक्षण हैं। इसलिए कई बार कई लोग पूछते हैं कि संसार के अंदर ऐसा कौन इंसान होगा? ईश्वर को मालूम है कौन वह इंसान है, जो इन लक्षणों के आधार से युक्त है।

भगवान अपने परमधाम का वर्णन पुन: बताते हैं कि मेरा वो परमधाम, जिसे न सूर्य, न चंद्र, न अग्नि प्रकाशित कर सकती है। वहां दिव्य प्रकाश अपने आप ही विद्यमान है। वहाँ पर वो उल्टा वृक्ष है आत्माओं का। हर आत्मा वहाँ शाश्वत् स्वरूप में निवास करती है। तो उल्टा वृक्ष वहाँ है। फिर समयानुसार वो आत्मायें नीचे आती जाती हैं। वह वृक्ष संसार में फैलता जाता है। ये तीनों संस्कार के आधार पर, आत्मायें जन्म लेती हैं। सर्व आत्माएं मेरी संतान हैं। शरीर त्याग करते समय जीवात्मा मन, बुद्धि और पाँचों ज्ञानेन्द्रिय के कार्य-कलापों को संस्कार रूप में ले जाती है और नया शरीर धारण करती है। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

हीरा बनाया है ईश्वर ने हर किसी को, पर चमकता वही है जो तराशने की हद से गुज़रता है।

अच्छे लोगों की भगवान परीक्षा बहुत लेता है, परंतु साथ नहीं छोड़ता। और बुरे लोगों को भगवान बहुत कुछ देता है, परंतु साथ नहीं देता।

पानी मर्यादा तोड़े तो 'विनाश' और वाणी मर्यादा तोड़े तो 'सर्वनाश' इसलिए हमेशा अपनी वाणी पर संयम रखो।

बुराई करना रोमिंग की तरह है, करो तो भी चार्ज लगता है, सुनो तो भी चार्ज लगता है। और नेकी करना एल.आई.सी. की तरह है, ज़िन्दगी के साथ भी, ज़िन्दगी के बाद भी।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510, सदस्यता के लिए सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088, Email- omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेयबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।